हमारी पर्यावरण दोस्त है चुलबुली गौरैया

विश्व गौरैया दिवस पर विशेष

प्रभुनाथ शुक्ल

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् मोहम्मद ई. दिलावर नासिक से हैं और वह बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी से जुड़े रहे हैं। उन्होंने यह मुहिम 2008 से शुरू की थी। आज यह दुनिया के 50 से अधिक मुल्कों तक पहुंच गयी है। दिलावर के विचार में गौरैया संरक्षण के लिए लकड़ी के बुरादे से छोटे-छोटे घर बनाए जाएं और उसमें खाने की भी सुविधा भी उपलब्ध हो।

अहमारी सोच अब आहिस्ता-आहिस्ता बदलने लगी है। हम हम प्रकृति और जीव जंतुओं के प्रति थोड़ा मित्रवत भाव रखने लगे हैं। घर की टैरिश पर पक्षियों के लिए दाना-पानी डालने लगे हैं। गौरैया से हम फ्रेंडली हो चले हैं। किचन गार्डन और घर की बालकनी में कृतिम घोंसला लगाने लगे। गौरैया धीरे हमारे आसपास आने लगी है। उसकी चीं-चीं की आवाज हमारे घर आंगन में सुनाई पड़ने लगी है। गौरैया संरक्षण को लेकर ग्लोबल स्तर पर बदलाव आया है यह सुखद है। फिर भी अभी यह नाकाफी है। हमें प्रकृति से संतुलन बनाना चाहिए। हम प्रकृति और पशु -पक्षियों के साथ मिलकर एक सुंदर प्राकृतिक वातावरण तैयार कर सकते हैं। जिन पशु पक्षियों को हम अनुपयोगी समझते हैं वह हमारे लिए प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करने में अच्छी खासी भूमिका निभाते हैं, लेकिन हमें इसका ज्ञान नहीं होता।

गौरैया हमारी प्राकृतिक मित्र है और पर्यावरण में सहायक है। गौरैया प्राकृतिक सहचरी है। कभी वह नीम के पेड़ के नीचे फुदकती और चावल या अनाज के दाने को चुगती है। कभी घर की दीवार पर लगे आईने पर अपनी हमशक्ल पर चोंच मारती दिख जाती। एक वक्त था जब बबूल के पेड़ पर सैकड़ों की संख्या में घोंसले लटके होते थे,लेकिन वक्त के साथ गौरैया एक कहानी बन गई। हालांकि पर्यावरण के प्रति जागरूकता के चलते हाल के सालों में यह दिखाई देने लगी है। गौरैया इंसान की सच्ची दोस्त भी है और पर्यावरण संरक्षण में उसकी खासी भूमिका भी है। दुनिया भर में 20 मार्च गौरैया संरक्षण दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी गौरैया संरक्षण के लिए लोगों से पहल कर चुके हैं। उन्होंने राज्यसभा सदस्य बृजलाल के प्रयासों को ट्वीटर पर खूब सराहा था और कहा कि गौरैया संरक्षण को लेकर आपका प्रयास बेहतरीन और काबिले तारीफ है। राज्यसभा सदस्य बृजलाल ने अपने घर में गौरैया संरक्षण को लेकर काफी अच्छे उपाय किए हैं। उन्होंने गौरैया के लिए दाना पानी और घोंसले की व्यवस्था की है। जंगल में आजकल पंच सितारा संस्कृति विस्तार ले रही है। प्रकृति के सुंदर स्थान को भी इंसान कमाने का जरिया बना

लिया है। जिसकी वजह पशु- पक्षियों के लिए खतरा बन गया है।

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् मोहम्मद ई. दिलावर के प्रयासों से 20 मार्च को चुलबुली गौरैया के लिए रखा गया। 2010 में पहली बार यह दुनिया में मनाया गया। गौरैया का संरक्षण हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इनसान की भोगवादी संस्कृति ने हमें प्रकृति और उसके साहचर्य से दूर कर दिया है। गौरैया एक घरेलू और पालतू पक्षी है। यह इंसान और उसकी बस्ती के पास अधिक रहना पसंद करती है। पूर्वी एशिया में यह बहुतायत पायी जाती है। यह अधिक वजनी नहीं होती। इसका जीवनकाल दो साल का होता है। यह पांच से छह अंडे देती है।

भारत की आंध्र यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन में गौरैया की आबादी में 60 फीसदी से अधिक की कमी बताई गई है। ब्रिटेन की रॉयल सोसाइटी आफ प्रोटेक्शन आफ बड्र्स ने इस चुलबुले और चंचल पक्षी को रेड लिस्ट में डाल दिया है। दुनिया भर में ग्रामीण और शहरी इलाकों में गौरैया की आबादी घटी है। गौरैया की घटती आबादी के पीछे मानव विकास सबसे अधिक जिम्मेदार है। गौरैया पासेराडेई परिवार की सदस्य है लेकिन इसे वीवरपिंच परिवार का भी सदस्य माना जाता है। इसकी लंबाई 14 से 16 सेंटीमीटर होती है। इसका वजन 25 से 35 ग्राम तक होता है। यह अधिकांश झुंड में रहती है। यह अधिक दो मील की दूरी तय करती है। मानव जहां-जहां गया, गौरैया उसका हमसफर बनकर उसके साथ गयी।

गांवों में अब पक्के मकान बनाए जा रहे हैं। जिसका कारण है कि मकानों में गौरैया को अपना घोंसला बनाने के लिए सुरक्षित जगह नहीं मिल रही है। पहले गांवों में कच्चे मकान बनाए जाते थे। उसमें लकड़ी और दूसरी वस्तुओं का इस्तेमाल किया जाता था। कच्चे मकान गौरैया के लिए प्राकृतिक वातावरण और तापमान के लिहाज से अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराते थे,लेकिन आधुनिक मकानों में यह सुविधा अब उपलब्ध नहीं होती। यह पक्षी अधिक तापमान में नहीं रह सकता। देश की खेती-किसानी में रासायनिक उर्वरकों का बढ़ता प्रयोग बेजुबान पक्षियों और गौरैया के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। केमिकल युक्त रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से कीड़े-मकोड़े भी विलुप्त हो चले हैं। जिनमें गिद्ध, कौवा, महोख, कठफोड़वा, कौवा और गौरैया शामिल हैं इनके भोजन का भी संकट खड़ा हो गया है।

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् मोहम्मद ई. दिलावर नासिक से हैं और वह बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी से जुड़े रहे हैं। उन्होंने यह मुहिम 2008 से शुरू की थी। आज यह दुनिया के 50 से अधिक मुल्कों तक पहुंच गयी है। दिलावर के विचार में गौरैया संरक्षण के लिए लकड़ी के बुरादे से छोटे-छोटे घर बनाए जाएं और उसमें खाने की भी सुविधा भी उपलब्ध हो। घोंसले सुरक्षित स्थान पर हों, जिससे गौरैयों के अंडों और चूजों को हिंसक पक्षी और जानवर शिकार न बना सकें। हमें प्रकृति और जीव-जंतुओं के सरोकार से लोगों को परिचित कराना होगा। आने वाली पीढ़ी तकनीकी ज्ञान अधिक हासिल करना चाहती है, लेकिन पशु-पक्षियों से वह जुड़ना नहीं चाहती है। इसलिए हमें पक्षियों के बारे में जानकारी दिलाने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। जिससे हम अपनी पर्यावरण दोस्त को उचित माहौल दे पाएं।

(बरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं समीक्षक)

संपादकीय

हसीन सपने भर नहीं

आंध्र प्रदेश और नई दिल्ली से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से संबंधित दो अहम खबरें हैं। रविवार को अमरावती की जनसभा में वे शिक्षा-स्वास्थ्य के अनेक उन्नत केंद्रों से राज्य को एक जीवंत हब बनाने का ऐलान करते हैं। इनमें आईआईटी, आईआईएम और एम्स जैसे अनेक संस्थानिक उपहारों का पिटारा खोलते हैं-इस अंदाज में कि ह्यये लीजिए,वो भी लीजिए। और बोलिए कि और आपको क्या चाहिए।' ऐसा दो ही स्थितियों में होता है-जब आप किसी को बेहद मूल्यवान और वजनदार मानकर उसको साधने में बिछ से जाते हैं या फिर किसी को अपने अस्तित्व का बेहद सगा मानते हैं। उसके स्वागत-सत्कार में कसर नहीं छोड़ना चाहते। वैसे चुनावी मौसम में यह दल-निरपेक्ष आम रवायत है। पर भाजपा और नरेन्द्र मोदी के संदर्भ में खास है। मंच पर इसके साक्ष्य थे-तेलुगू देशम के चंद्रबाबू नायडू और जनसेना के नेता। एनडीए के संयोजक रहे नायडू की सालों बाद एनडीए में वापसी हुई है। हालांकि नायडू भ्रष्टाचार के मामले, जिसके खिलाफ पीएम का अभियान है, में अभी पिछले महीने जेल से जमानत पर हैं। इस विडम्बना के बावजूद भाजपा और प्रधानमंत्री का भरोसा है कि वे इनके सहारे आंध्र प्रदेश की लोक सभा सीटों से '400 पार' जाने का पुख्ता इंतजाम कर लेंगे। विधानसभा में भी कुछ सीटें लाकर गठबंधन सरकार का हिस्सा बन सकते हैं। पिटारा खोलने की यह पहली स्थिति है। यहां कर्नाटक की 25 सीटों की बड़ी भरपाई करनी है,जो कांग्रेस के कब्जे में है-तेलंगाना भी। केरल में भाजपा के नामलेवा तो एकाध हो गए हैं, पर वे सीटें लाने वाले अभी भी नहीं हैं। तमिलनाडु में भाजपा का अन्नाद्रमुक से अलगाव हो चुका है। इसलिए आंध्र और चंद्रबाबू भाजपा के लिए अभी एवं आगे के लिए अपरिहार्य हैं। योजनाओं की झड़ी की यह दूसरी बाध्यता है। इस तस्वीर से बिल्कुल उलट है-तीसरी बार सत्ता में वापसी की प्रधानमंत्री की आस्ति। इसी आधार पर वे सत्ता में आने के 100 दिन बाद के कार्यक्रम बनाने का निर्देश अपनी कैबिनेट को दिया हुआ है। इसके आगे, वे आजादी की सदी 2047 तक देश के सवार्गीण विकास का एजेंडा तैयार किए हुए हैं, जो सर्वे पर आधारित है। विपक्ष इस पर हंस सकता है और इसे मतदाताओं को बरगलाने का एक हथकंडा करार दे सकता है। एक मायने में ऐसा हो भी सकता है। पर योजना और क्रियान्वयन में सरकार जिस तरह से चली है, उसे देखते हुए इस प्रधानमंत्री की आस्ति को 'मुंगेरीलाल के हसीन सपने' मानने में कठिनाई है।

चिंतन-मनन

धर्म क्या है?

धर्म के मुख्यतः दो आयाम हैं। एक है संस्कृति, जिसका संबंध बाहर से है। दूसरा है अध्यात्म, जिसका संबंध भीतर से है। धर्म का तत्व भीतर है, मत बाहर है। तत्व और मत दोनों का जोड़ धर्म है। तत्व के आधार पर मत का निर्धारण हो, तो धर्म की सही दिशा होती है। मत के आधार पर तत्व का निर्धारण हो, तो बात कुरूप हो जाती है। एक संत आता है। भीतर की गुफा में जाकर धर्म के तत्व अध्यात्म को जानता है। फिर वह चला जाता है। फिर मत बचा रहता है। उसके आधार पर एक संस्कृति विकसित होती है। संस्कृति के फूल खिलते हैं। काल प्रम में संस्कृति मुख्य हो जाती है। अध्यात्म गौण हो जाता है। और फिर एक संत को, एक जीवित संत को इस धरती पर आना पड़ता है। फिर से अंगारे जलाने होते हैं। फिर से दीप जलाना होता है। जो दीप कभी जला था, उसके आधार पर जो गीत रह गए थे, वे पुराने पड़ जाते हैं। फिर से एक नया दीपक जलता है। नई रोशनी आती है। नया गीत फूटता है। नई नदी बहती है। सब कुछ नूतन हो जाता है। तो कहूँगा कि तुम जानो या न जानो, तुम सब धर्म के मार्ग पर ही हो। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हैं, जो धर्म के मार्ग पर नहीं है। यह और बात है कि उसे पता है, या नहीं पता है। लेकिन धर्म का तत्व क्या है? धर्म का उद्गम क्या है? कहाँ पहुँचना है हमें? गंतव्य कहाँ है?

उस बात को बताने के लिए ही संत इस धरती पर आता है। स्वामी विवेकानंद जी भी आए। और ये याद दिलाने के लिए आता है संत कि तुम कौन हो? अमृतस्य पुत्रा?। तुम राम-कृष्ण की संतान हो। तुम कबीर और गुरुनानक की संतान हो। तुम बुद्ध और महावीर की संतान हो। तुम क्यों दीन-हीन और दरिद्र जैसा जीवन जी रहे हो? क्यों अशांत हो, क्यों दुःखी हो? अपना स्वरूप हम भूल गए हैं। करीब-करीब ऐसे ही हम जीवन जीते हैं अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर। इस जीवन की कितनी गरिमा है। इस जीवन की कितनी क्षमता है। अनंत आनन्द का खजाना, जो हमारे भीतर है, उसकी ओर हम पीठ करके जीते हैं। महर्षि नारद की तरह फिर कोई संत आता है हमारे बीच। कभी बुद्ध, कभी महावीर, कभी कृष्ण, कभी राम, कभी गुरुनानक, कभी गुरु अर्जुनदेव, कभी दादू, कभी दरिया, कभी रैदास, कभी मीरा, कभी सहजो, कभी दया बनकर आता है और हमसे कहता हैं कि चलो! उस मानसरोवर को चलो, जहाँ से तुम आए हो।

चुनाव की अवधि क्यों बढ़ी शोध का विषय

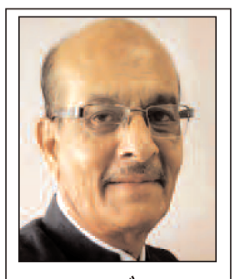

सनत जैन

इस बार के लोकसभा के चुनाव सात चरणों में पूरे होंगे। भारत में ऐसा क्यों होता है। चुनाव की तारीख, अवधि और चुनाव सुधारों को लेकर बातें तो बड़ी-बड़ी होती हैं, लेकिन सुधार नहीं होता है! वही ढाक के तीन पात की स्थिति बनी रहती है। हाल ही में चुनावी बांड को लेकर चुनाव आयोग और राजनीतिक दलों के बीच की कार्य प्रणाली उजागर हो रही है, उसको लेकर मतदाता से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक हैरान है। अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव निश्चित अवधि में निश्चित दिन में होता है। 100 साल से ज्यादा का समय हो गया है। यह परंपरा अमेरिका में आज भी चली आ रही है। हर साल नवंबर माह के प्रथम मंगलवार को राष्ट्रपति पद की वोटिंग की तारीख निश्चित है। एक ही दिन में अमेरिका के चुनाव संपन्न हो जाते हैं। इस साल अमेरिका में परंपरा के अनुसार 5 नवंबर को मतदान होगा। 2014 के बाद से भारत में चुनाव की अवधि लगातार बढ़ती चली जा रही है। इसके पहले चार चरणों में लोकसभा चुनाव होते थे। जब देश के पास उतने संसाधन नहीं थे, तब लोकसभा का चुनाव कम समय में संपन्न हो जाता था। अब सभी संसाधनों के होते हुए भी सात चरण और 42 दिन में चुनाव होगा। चुनाव की अवधि बढ़ने से अब चुनाव प्रक्रिया को लेकर शोध की जरूरत महसूस होने लगी है। दुनिया के देशों में मत पत्र से चुनाव होते हैं। भारत में समय बचाने के लिए ईवीएम से चुनाव होते हैं। उसके बाद भी हनुमान जी की पूंछ की तरह चुनाव आयोग इच्छानुसार चुनाव की अवधि बढ़ाता चला जा रहा है। निश्चित रूप से सत्तारूढ़ दल को लंबे समय तक चुनाव प्रचार करने का समय मिलता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से हर चरण का चुनाव प्रचार देश के सभी मतदाताओं तक पहुंचता है। यह अलग बात है, गोदी मीडिया एक ही पार्टी के प्रचार को सबसे ज्यादा दिखाता है। यह भी एक कारण हो सकता है। सभी सात चरणों के मतदान तक टीवी चैनल में, लोकसभा के चुनाव प्रचार को देखा जा सकता है। 2019 में 10 मार्च को चुनाव की घोषणा हुई थी। वोटों की गिनती 23 मई को संपन्न हो गई थी। इस बार 16 मार्च को चुनाव की घोषणा हुई है। 4 जून को नतीजे सामने आएंगे। पिछली बार 26 मई को प्रधानमंत्री ने शपथ ली थी। अब 4 जून को जब नतीजे आएंगे। उसके बाद ही प्रधानमंत्री पद की शपथ होगी। भारत में ज्योतिष का बड़ा प्रभाव है। चुनाव आयोग ने भी शायद ज्योतिषाचार्य से पूछकर चुनाव की तारीखें तय की होंगी। प्रधानमंत्री का कार्यकाल इस हिसाब से 5 वर्ष से अधिक का होगा। इस लोकसभा चुनाव में 81 दिन तक आदर्श आचार संहिता लागू रहेगी। जो पिछले चुनाव की तुलना में 6 दिन अधिक है। मई-जून का महीना भारत में जानलेवा गर्मी वाला होता है। राजनीतिक दलों को चुनाव प्रचार करने में और मतदाताओं को मतदान करने में तकलीफ का सामना करना पड़ेगा। अमेरिका में 100 साल से राष्ट्रपति चुनाव की परंपरा का अक्षरशः पालन किया जा रहा है।

केंद्रीय चुनाव आयोग सारे संसाधन होने के बाद भी चार चरणों का चुनाव सात चरण में करा रहा है। ऐसी स्थिति में जब वन नेशन वन इलेक्शन की जिम्मेदारी चुनाव आयोग को पूरा करना होगी। तब क्या हाल होगा। यह आसानी से समझा जा सकता है। अब यह भी कहा जाने लगा है, चुनाव आयोग को सरकार के निर्देशन पर काम करना पड़ता है। सरकार के बनाये प्रोग्राम पर काम करना चुनाव आयोग की बाध्यता है। चुनाव आयोग संवैधानिक संस्था जरूर है, लेकिन अब वह सरकारी नियंत्रण से मुक्त नहीं है। यदि चुनाव आयोग स्वतंत्र होता, तो निश्चित रूप से पूर्व चुनाव आयुक्त टीएन सेशन के कार्यकाल की परंपरा को अपनाकर चुनाव कराता। ऐसी स्थिति में चुनाव आयोग की वैसी ही तूती बोलती, जैसे टीएन सेशन के समय पर बोलती थी। उस समय चुनाव आयोग से सरकारी अधिकारी सभी राजनेता डरते थे। चुनाव निष्पक्ष तरीके से होते थे। मतदाताओं का पूरा विश्वास चुनाव आयोग पर होता था। अभी तो चुनाव आयोग पत्रकार वार्ता में पत्रकार के सवाल को टालकर जबाब देने की स्थिति में नहीं है। टीएन सेशन ने निष्पक्ष चुनाव कराने में हमेशा निष्पक्ष होकर बिना डरे जो निर्णय लिए, उसकी आज भी देश और दुनिया में सराहना होती है। चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली से उसकी निष्पक्षता को लेकर मतदाताओं के विश्वास में कमी आ रही है। जो लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए ठीक नहीं है।

उप्र लॉ एंड ऑर्डर : व्यवस्था में बुलडोजरी सुधार

सुशील देव

कानून-व्यवस्था के मामले में कभी उत्तर प्रदेश का नाम बदनाम हुआ करता था। मगर वहां की मौजूदा सरकार के द्वारा कई महत्त्वपूर्ण पहल और सुधारों की वजह से अब गुंडा-माफियाओं राज जैसे संबोधन भी अब शायद ही सुनने को मिलते हैं। सरकार के इन कदमों का मुख्य उद्देश्य राज्य में सुरक्षा और न्याय व्यवस्था को मजबूत बनाना रहा है। इस बात में संशय नहीं कि सिर्फ इस एक काम के बूते राज्य की सत्ता पर कमल खिला।

पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण कदम उत्तर प्रदेश पुलिस की सुधार का है। सरकार ने पुलिस के कामकाज में तेजी और पारदर्शिता लाने के लिए कई नए नियम और उपाय अमल में लाए हैं। इससे पुलिस की क्षमता में वृद्धि हुई है और अपराधियों को पकड़ने में अधिक सफलता मिल रही है। दूसरा कदम कानूनी प्रक्रिया में सुधार का है। सरकार ने कानूनी प्रक्रिया को और अधिक दुरु स्त के लिए नए नियम लागू किए हैं। इससे न्यायिक कार्रवाई में देरी कम हुई है और अपराधियों को सख्त सजा मिलने में अपेक्षाकृत देरी कम हो रही है। तीसरा महत्त्वपूर्ण कदम लोगों को जागरूक करने और सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने का है। यानी आम लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित किया है।

सरकार ने लोगों को कानून का पालन करने और अपराधियों के खिलाफ रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया है। गौरतलब है कि बेहतर कानून-व्यवस्था के कारण उत्तर प्रदेश की जनता ने योगी सरकार को दोबारा समर्थन दिया था। प्रदेश में दूसरी बार मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करते हीं योगी आदित्यनाथ ने राज्य को भयमुक्त बनाने का भागीरथ प्रयास किया। खासकर, व्यापारी वगरे के लिए उन्होंने भ्रष्टाचार और रंगदारी जैसे प्रथाओं पर नकेल कसा। उसी का परिणाम रहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 में करीब 40 लाख करोड़ के निवेश का प्रस्ताव प्राप्त हुए, जबकि 2017 से पहले प्रदेश में निवेश के लिए कोई वहां आना नहीं चाहता था।

उन्होंने हमेशा और असामाजिक और अराष्ट्रीय तत्वों के साथ ह्यजीरो टॉलरेंसह्ल नीति के तहत अपने काम को अंजाम तक पहुंचाया। त्वरित कार्रवाई कर समस्याओं का हल ढूंढना उनकी अच्छी नीतियों में शामिल रहा। यही कारण है कि आम लोगों की गुहार लगाने पर उन्हें तुरंत न्याय दिलाया। इससे योगी सरकार के प्रति लोगों में विश्वास पैदा हुआ जो कहीं-न-कहीं पुलिस की संवेदनशीलता को भी दशार्ता है। माफियाओं और अन्य अपराधियों के खिलाफ करीब करोड़ों-अरबों रुपए की संपत्ति का जब्तीकरण और ध्वस्तीकरण किया।

इसी वजह से उन्हें ह्यबुलडोजर बाबाह्ल की संज्ञा भी दी गई। अब उत्तर प्रदेश में राज्य सरकार की प्रतिबद्धता से त्योहार, मेले और जुलूस आदि में सांप्रदायिक सौहार्द का संतुलन बढ़ गया है। महिलाओं की सुरक्षा मजबूत हुई है। मौजूदा सरकार में अपराधी अपराध से तौबा करने लगे हैं। सरकार द्वारा प्रदेश में अपराध मुक्त, भय मुक्त एवं अन्याय मुक्त वातावरण का सृजन करते हुए कानून का राज स्थापित हुआ है। गुंडों, माफियाओं और अराजक तत्वों को न्यायिक प्रक्रिया के शिकंजे में कसा गया है। मुख्यमंत्री की कार्यशैली की देश-विदेश में प्रशंसा हुई है। मुख्यमंत्री योगी मानते हैं कि अपराध की बदलती प्रकृति के अनुसार कानून के रखवालों को भी खुद में बदलाव लाना चाहिए। यानी आज स्मार्ट पुलिसिंग जरूरी है। पुलिस सुधार के लिए राज्य में उल्लेखनीय पहल किए गए। पुलिस अधिकारियों को न्यायिक कायरे में शामिल होने के लिए प्रशिक्षित किया गया, जिससे उन्हें अपराधियों को पकड़ने और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने में अधिक सक्षमता हासिल हुई है। मुख्यमंत्री ने हमेशा इंफ्रास्ट्रक्चर तकनीक और ट्रेनिंग पर काफी बल दिया।

यह उनकी दूरदर्शिता का परिचायक ही रहा कि आज उत्तर प्रदेश की वर्दी से गुंडों और माफिया सकते में है बल्कि आम लोगों का भी पुलिस पर विश्वास बढ़ा है। राज्य सरकार ने महिला सुरक्षा को लेकर कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाया। पुलिस बल को मजबूत करने के लिए महिला पुलिस बटालियन का सृजन किया। भूमाफियाओं के खिलाफ बेहतर कानून-व्यवस्था में चौकसी दिखाई। आज थानों का निरंतर निरीक्षण, पुलिस के कर्तव्य और भ्रष्टाचार के खिलाफ सरकार की सजगता ने असुरक्षित और बीमारू राज्य की छवि से उत्तर प्रदेश को लगभग मुक्त कर दिया है। ऐसे कई कदम योगी सरकार ने उठाए, जिसके कारण वहां अपराध पर लगाम लगा है।

करीब 40 से अधिक पुलिस थाने, दर्जनों पुलिस चौकियां और लगभग डेढ़ लाख से अधिक नई पुलिस भर्तियां भी वहां की कानून-व्यवस्था में बदलाव का संबल बना है। सरकार ने अपने स्थानीय स्तर पर अपराध निवारण समितियों की स्थापना की है ताकि निचले स्तर पर ज्यादा से ज्यादा अपराध को रोका जा सके। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के मुताबिक पिछले कुछ वर्षों में उत्तर प्रदेश में अपराध तेजी से घटे पुलिस की वर्दी से अपराधियों में डर पैदा हुआ है। उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था में सुधार राज्य के विकास और प्रगति के लिए महत्त्वपूर्ण है और सरकार का यह प्रयास सराहनीय है। हां, बाकी राज्य भी अगर उत्तर प्रदेश से सीख लें तो कानून-व्यवस्था के मसले पर देशव्यापी सुधार दिखेंगे।